यूनाइटेड बासेल मिशन चर्च काउंसिल, मुंबई

बासेल क्रोनिकल्स

HARVEST EDITION

अद्भुत फसल

"हमारे परमेश्वर ने पृथ्वी को अद्भुत फसल से आशीष दी है।" (भजन संहिता 67:6)

www.ubmchurches.com

अक्टूबर 2025 मुद्दा 16

UBMC OFFICE BEARERS

PRESIDENT: Mr. Vishal Shiri

VICE PRESIDENT: Mrs. Alma Xavier

SECRETARY: Mrs. Mable Soans

ASSOCIATE SECRETARY: Mr. Allwin Karkada

TREASURER: Mr. Samuel Richard Soans

EDITOR

Rev. Sam Muni

EDITORIAL DEPARTMENT

Rev. Sam Muni
Rev. Jayant Roch
Rev. Sunil Joy
Rev. Machline Ananda
Rev. John Elizer

OUTREACH DEPARTMENT

Rev. Vasu Paul

SUNDAY SCHOOL DEPARTMENT

Rev. Jayanth Roch

WOMEN'S DEPARTMENT

Rev. Samuel Tatigiri

YOUTH DEPARTMENT

Rev. John Elizer

KANNADA TRANSLATION

Rev. Samuel Machline Ananda
Rev. John Elizer
Rev. Sunil Joy
Rev. Sam Muni

HINDI TRANSLATION

Rev. Jayanth Roch
Mrs. Renuka Roch

ENGLISH PROOF READING

Mrs. Shweta Anchan
Mrs. Rochelle Samodar
Rev Jayanth Roch

KANNADA PROOF READING

Rev. Sam Muni
Rev. Samuel Machline Ananda
Rev. John Elizer
Rev. Sunil Joy

HINDI PROOF READING

Rev. Jayant Roch
Mrs Renuka Roch

CREATIVE TEAM

Mr. Ansty Karkada
Rev Sam Muni

ART DIRECTOR

Mr. Ansty Karkada

MUSIC DEPARTMENT

Rev. Samuel Machline Ananda
Rev. Susheel B Sumitra

विषयसूची

1 **संपादकीय**

रेव. कमल कश्यप
यू.बी.एम. क्रिस्टा शांति चर्च, मरोल

2 **पदाधिकारी के डेस्क से**

श्री ऑलविन करकड़ा
सह सचिव, यूनाइटेड बेसल मिशन चर्च, मुंबई

3 **पादरी की मेज से**

पास्टर आरोन ग्रिफिथ्स
यू.बी.एम. विश्रांति चर्च, मलाड

4 **आज का धर्मशास्त्र**

प्रोफेसर जोएल लिविंगस्टन
यू.बी.एस., पुणे

5 **आज की आध्यात्मिकता**

रैव. ग्लैडसन सी. करकड़ा
यू.बी.एम. क्रिस्टा महिमा चर्च, वसई

6 **नेतृत्व आज**

श्री बिजु उम्मेन
अध्यक्ष वाई.एम.सी.ए. अंबरनाथ

7 **मकारियोस**

पास्टर दीक्षा एलाइजर
यू.बी.एम. चर्च, कल्याण

परूसिया

रैव. सैमुअल टाटगिरी

यू.बी.एम .बैथेल चर्च ,अंबरनाथ

8

मिशनरी कहानी

रैव. जॉन एलाइजर

यू.बी.एम. क्रिस्ता प्रीति चर्च, भांडुप

9

मण्डली से लेख

श्रीमती हेलेन करकड़ा

यू.बी.एम.क्रिस्ता कृपा चर्च, चेंबूर

10

कार्यक्रम की रिपोर्ट और तस्वीरें

11

संपादकीय

रेव. कमल कश्यप
यू.बी.एम. क्रिस्टा शांति चर्च, मरोल

हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम में आप सभी को शुभकामनाएँ!

हमें यह बताते हुए बहुत हर्ष हो रहा है कि हम यूनाइटेड बेसल मिशन सभा संदेश का फसल अंक 2025 लेकर आए हैं। इस वर्ष का विषय है – "अद्भुत फसल।"

यह विषय भजन संहिता 67:6 से लिया गया है, जहाँ लिखा है – "हमारे परमेश्वर ने पृथ्वी को अद्भुत फसल से आशीष दी है" (सी.ई.वी.)। प्रिय मित्रों, यह समय है कि हम सर्वशक्तिमान प्रभु को उसकी सारी भलाइयों को स्मरण करते हुए धन्यवाद अर्पण करें। हममें से प्रत्येक गवाही दे सकता है कि परमेश्वर ने अपने सारे वचनों को पूरा किया है और हम सबने प्रभु से भरपूर आशीषें प्राप्त की हैं। बाइबल में, व्यवस्थाविवरण 16:1-17 में लिखा है कि इस्राएली हर वर्ष में तीन बार यरूशलेम में यहोवा के घर में जाकर धन्यवाद अर्पण करते और उसके नाम की महिमा करते थे— वे ख़मीरी रोटी का पर्व (पास्का), झोंपड़ियों का पर्व (फसल) और मण्डपों का पर्व। पवित्रशास्त्र बताता है कि इस्राएली इन पर्वों को स्मरण करते हुए वर्ष में तीन बार परमेश्वर के घर जाकर अपनी कृतज्ञता प्रकट करते थे।भजन संहिता 67 परमेश्वर की आशीषों के लिए उसकी स्तुति का भजन है। हम जानते हैं कि इस्राएलियों को आशीष देने का वचन परमेश्वर ने अब्राहम के साथ की गई वाचा में दिया था। उत्पत्ति 12:1-3 में परमेश्वर ने अब्राहम से कहा: "मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊँगा, और तुझे आशीष दूँगा; मैं तेरा नाम महान करूँगा, और तू आशीष का कारण होगा। जो तुझे आशीष देंगे, उन्हें मैं आशीष दूँगा, और जो तुझे शाप देगा उसे मैं शाप दूँगा; और पृथ्वी के सब कुल तेरे कारण आशीष पाएंगे।" प्रिय भाइयों और बहनों, परमेश्वर ने अब्राहम से वादा किया कि वह उसे आशीष देगा और उसके द्वारा सारी पृथ्वी के लोग आशीष पाएंगे। इससे हम दो महत्वपूर्ण बातें समझते हैं:

1. परमेश्वर अपने लोगों को आशीष देता है:

हम जानते हैं कि परमेश्वर ने अब्राहम को मेसोपोटामिया की भूमि से बुलाया। उसने अब्राहम और उसकी संतानों को कनान देश सदा के लिए देने का वचन दिया। यद्यपि अब्राहम, इसहाक और याकूब कनान में परदेसी की तरह रहे, परन्तु परमेश्वर ने उनके वंशजों के लिए अपना वचन पूरा किया। मूसा और यहोशू के नेतृत्व में वे कनान देश में बसे। परमेश्वर ने उन्हें हर अच्छी वस्तु से आशीष दी और उनके सब शत्रुओं से उनकी रक्षा की। वे कनान में समृद्ध हुए। इसीलिए दाऊद भजन संहिता 116:12-14 में कहता है:" मैं यहोवा का

क्या प्रतिफल दूँ, जो उसने मुझ पर किए हैं? मैं उद्धार का कटोरा उठाकर यहोवा का नाम लूँगा। मैं अपनी मन्नतों को यहोवा को चुकाऊँगा, अब सब लोगों के सामने।" आज हम नए इस्राएली के रूप में, यीशु मसीह में अब्राहमी आशीषों के भागीदार हैं। परमेश्वर ने हमारे हाथों के काम को आशीष दी है। उसने हमारी सारी सांसारिक और आत्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति की है। हमारी बीमारी और स्वास्थ्य, कमी और सम्पन्नता—हर स्थिति में वह हमारे साथ रहा है। वह हमारे प्रति सदा विश्वासयोग्य रहा है। क्या हम धन्यवाद के साथ उसे आदर देने के लिए तैयार हैं?

2. परमेश्वर हमें दूसरों के लिए आशीष बनने को आशीष देता है:

आशीष परमेश्वर का वह वरदान है, जो उसके नाम की महिमा करता है और हमारे द्वारा दूसरों तक पहुँचकर उनके जीवन में भी उसका आदर बढ़ाता है। हमें सदा स्मरण रखना चाहिए कि परमेश्वर हमें इसलिए आशीष देता है ताकि हम औरों के लिए आशीष बनें। परमेश्वर ने अब्राहम के द्वारा इस्राएलियों को चुना और उन्हें राष्ट्रों का ज्योति बनाया। उनका कार्य था ,सब लोगों में यहोवा के सामर्थी कामों का प्रचार करना। प्रियजनो, "अद्भुत फसल" का क्या अर्थ है? जो आशीषें हम परमेश्वर से पाते हैं, वे हमारे आसपास के लोगों के लिए कैसे आशीष बन सकती हैं? लैव्यव्यवस्था 26:4 में परमेश्वर ने इस्राएलियों से वाचा बांधी और कहा— "यदि तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे तो मैं समय पर वर्षा दूँगा, और भूमि अपनी उपज और वृक्ष अपने फल देंगे।"

परमेश्वर ने स्पष्ट कर दिया कि उसकी आशीष इस्राएल की आज्ञाकारिता पर निर्भर थी (लैव्य. 26:1-13)। यदि वे आज्ञाकारी रहते तो आशीषें अन्य राष्ट्रों के सामने यहोवा की गवाही देतीं (व्य. 28:1-14)। लेकिन यदि वे आज्ञा न मानते, तो वर्षा रुक जाती और खेत उपज न देते (लैव्य. 26:14-39)। प्रिय मित्रों, जो परमेश्वर अपने लोगों को अन्न नहीं देता, दूसरे धर्मों के लोग उसका भय क्यों करेंगे? आज चर्च पर भी यही लागू होता है—जब हम आज्ञा मानते, प्रार्थना करते और प्रभु पर भरोसा रखते हैं, वह हमारी सब आवश्यकताओं को पूरी करता है। और हमारे आसपास के लोग देखकर जान जाते हैं कि परमेश्वर हमारी चिन्ता करता है। तब हमें यीशु का सुसमाचार बाँटने का अवसर मिलता है। भजन 67:6 वास्तविक फसल की बात करता है, पर यह हमें "आत्मिक फसल" की भी याद दिलाता है, जो तब आती है जब हम प्रभु की गवाही देते हैं (यूहन्ना 4:34-38)। परमेश्वर अपनी प्रजा और कलीसिया के द्वारा जातियों को आशीष देता है, ताकि सब राष्ट्र उस पर विश्वास करें और उसकी आज्ञा मानें। फसल पर्व के अवसर पर इस्राएली खेतों की पहिली उपज चढ़ाते थे (लैव्य. 23:9-14), यह स्वीकार करते हुए कि "हमारे परमेश्वर ने भूमि को आशीष दी है और हमने अद्भुत फसल पाई है।"

प्रिय भाइयों और बहनों, आज हम सब भी परमेश्वर के अद्भुत कार्यों के साक्षी हैं। यह वही अद्भुत फसल है जिसे हमने वर्षभर अनुभव किया है। आइए, कलीसिया के रूप में हम परमेश्वर का आदर और महिमा करें, ताकि हमारे आसपास के लोग जान लें कि हमारा परमेश्वर हमारा प्रदाता है। "यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे किसी वस्तु की घटी न होगी।" यहोवा सर्वश्रेष्ठ है, इसलिए वह हमें सदा उत्तम देता है।

आप सबको आशीषमय और अद्भुत फसल उत्सव 2025 की शुभकामनाएँ!

प्रभु आपको आशीष दे।

पदाधिकारी के डेस्क से

श्री ऑलविन करकड़ा

सह सचिव, यूनाइटेड बेसल मिशन चर्च, मुंबई

जैसे ही हम एक और फसल महोत्सव की दहलीज़ पर खड़े हैं, हमारे हृदय परमेश्वर की भलाई के लिए कृतज्ञता और विस्मय से भर जाते हैं। हर वर्ष की फसल हमें केवल पृथ्वी के फलों की याद नहीं दिलाती, बल्कि हमारे जीवन में परमेश्वर की दया की प्रचुरता को भी दर्शाती है। भजन संहिता कहती है, "हमारे परमेश्वर ने पृथ्वी को अद्भुत फसल से आशीष दी है" (भजन 67:6, CEV)। यह वचन धन्यवाद का सार, सुंदरता से व्यक्त करता है—यह स्वीकार करते हुए कि हर आशीर्वाद प्रभु से ही आता है, जो जीवन का दाता और सृष्टि का पालनहार है।

बोने और काटने के लिए केवल कृषि का चक्र नहीं है; यह सृष्टि के ताने-बाने में बुना हुआ एक दिव्य दृष्टांत है। इसके द्वारा परमेश्वर हमें धैर्य, विश्वास, परिश्रम और उसके अनुग्रह पर निर्भर रहना सिखाता है। चाहे किसान कितना ही कुशल क्यों न हो, वर्षा, धूप और बीज में छिपे जीवन के रहस्य के बिना कोई फसल नहीं हो सकती। उसी प्रकार, हमारे आत्मिक जीवन में हम कितना भी प्रयत्न करें, वृद्धि और आशीष परमेश्वर ही देता है।

1. फसल – परमेश्वर की व्यवस्था

पृथ्वी अपनी सारी संपदा सहित प्रभु का अंगूर का बाग है। भरे हुए कोठार, फलों की टोकरी, पके हुए खेत, या हमारी थाली का साधारण भोजन हमें उस प्रार्थना की याद दिलाते हैं जो यीशु ने सिखाई: "आज हमें हमारा प्रतिदिन का आहार दे।" हर अन्न, हर सब्ज़ी, हर फल परमेश्वर की विश्वासयोग्य व्यवस्था का प्रमाण है।

अक्सर हम इस व्यवस्था को सामान्य समझ लेते हैं, पर जब ठहर कर सोचते हैं तो देखते हैं कि हमारी थाली केवल मानवीय परिश्रम से नहीं, बल्कि इसलिए भरी है क्योंकि परमेश्वर ने पृथ्वी को आशीष देने का निश्चय किया। यहाँ तक कि अभाव या सूखे के समय में भी वह मार्ग बनाता है। उसकी व्यवस्था केवल भौतिक भोजन तक सीमित नहीं; वह अपने वचन से हमारी आत्मा को पोषित करता है, अपनी आत्मा से हमें सांत्वना देता है और कलीसिया की संगति से हमें सामर्थ्य प्रदान करता है।

2. फसल – परमेश्वर का वचन

जलप्रलय के बाद प्रभु ने नूह से वादा किया: "जब तक पृथ्वी बनी रहेगी, बोने और काटने का समय, ठंड और गर्मी, ग्रीष्म और शीत, दिन और रात कभी समाप्त नहीं होंगे" (उत्पत्ति 8:22)। हर फसल इस बात का जीवंत स्मरण है कि परमेश्वर अपने वचनों को पूरा

करता है।

बीज बोना विश्वास का कार्य है। जो बीज बोया जाता है, वह मिट्टी में छिप जाता है—अदृश्य, असुरक्षित, अनिश्चित—फिर भी परमेश्वर की योजना से वह नया जीवन लाता है। इसी प्रकार, परमेश्वर के वादे कभी-कभी छिपे या विलंबित प्रतीत हो सकते हैं, पर वे कभी भुलाए नहीं जाते। उसका वचन एक बीज है, और उचित समय पर वह फल देगा।

3. फसल – कृतज्ञता का आह्वान

धन्यवाद फसल महोत्सव का हृदय है। एक ऐसे संसार में, जो लगातार और अधिक मांगता है और शायद ही कभी प्राप्त आशीर्वाद को सराहता है, परमेश्वर अपनी प्रजा को कृतज्ञ रहने के लिए बुलाता है। भजनकार कहता है, "हे मेरे प्राण, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूल" (भजन 103:2)। जब हम अपनी आशीषें गिनते हैं, हमें समझ आता है कि हमें केवल भौतिक ही नहीं, बल्कि आत्मिक, भावनात्मक और संबंधों में भी कितना समृद्ध किया गया है। एक कृतज्ञ हृदय परमेश्वर का आदर करता है और हमारे भीतर आनंद, नम्रता और संतोष को विकसित करता है।

4. फसल – उदारता का निमंत्रण

फसल केवल अपने लिए जमा करने के लिए नहीं है। पुराने नियम में परमेश्वर ने अपनी प्रजा को आज्ञा दी कि वे अपने खेतों के किनारे गरीबों, परदेशियों और विधवाओं के लिए छोड़ दें। फसल तब सचमुच अद्भुत बनती है ,जब वह दूसरों को आशीष देती है। प्रेरित पौलुस स्मरण कराता है, "तुम हर बात में समृद्ध किए जाओगे ताकि हर अवसर पर उदार हो सको" (2 कुरिन्थियों 9:11)। हमारे आशीर्वाद केवल व्यक्तिगत सुख के लिए नहीं, बल्कि परमेश्वर के राज्य के निर्माण और ज़रूरतमंदों की सहायता के लिए हैं। कलीसिया और समाज के रूप में, फसल महोत्सव दान, योगदान और सेवा के कार्यों द्वारा कृतज्ञता को मूर्त रूप देने का समय है।

5. फसल – आत्मिक शिक्षा

फसलों और फलों से परे, पवित्रशास्त्र आत्मिक सच्चाइयों को व्यक्त करने के लिए अक्सर फसल का चित्रण करता है। यीशु ने कहा, "कटनी तो बहुत है, परन्तु मजदूर थोड़े हैं" (मत्ती 9:37)। मनुष्यों की आत्माएं एक ऐसे खेत के समान हैं, जो उद्धार के शुभ समाचार की प्रतीक्षा कर रही हैं।

भौतिक फसल मनाते हुए हम अपने मिशन को याद करते हैं: सुसमाचार के बीज बोना, उन्हें प्रार्थना से सींचना, और वृद्धि के लिए परमेश्वर पर भरोसा करना। कलीसिया केवल आशीर्वाद पाने वाली नहीं, बल्कि वह माध्यम है जिसके द्वारा सबसे बड़ा आशीर्वाद—मसीह में उद्धार—दुनिया तक पहुँचाया जाता है।

6. फसल – अनन्त आशा

हर पृथ्वी की फसल हमें अंतिम फसल की ओर इंगित करती है। प्रकाशितवाक्य 14:15 में एक स्वर्गदूत पुकारता है, "अपनी दरांती चला कर काट ले, क्योंकि काटने का समय आ गया है और पृथ्वी की फसल पक गई है।"जो मसीह पर विश्वास करते हैं, उनके लिए यह अंतिम फसल आनंद, विश्राम और परमेश्वर के साथ अनन्त संगति का समय है। दूसरों के लिए यह प्रभु के लौटने से पहले मन-परिवर्तन का आह्वान है। इसलिए फसल महोत्सव आत्मिक चिंतन और तैयारी का भी अवसर है, जो हमें स्मरण दिलाता है कि हमारा जीवन ऐसे फल लाए जो परमेश्वर के राज्य के योग्य हों।

निष्कर्ष: एक अद्भुत फसल

जब हम फसल 2025 का उत्सव मनाते हैं, तो याद रखें कि पृथ्वी संयोग से नहीं, बल्कि हमारे प्रेममय परमेश्वर के हाथों से आशीषित है। सबसे छोटे बीज से लेकर हमारे जीवन की सबसे बड़ी आशीष तक, सब कुछ उसके अनुग्रह का उपहार है।

यह ऋतु हमें प्रेरित करे कि हम:

- अपनी प्रतिदिन की रोटी में परमेश्वर की व्यवस्था को पहचानें।
- उसके उन वादों पर भरोसा रखें जो कभी असफल नहीं होते।
- अपने हृदय में कृतज्ञता को बढ़ाएँ।
- ज़रूरतमंदों के साथ उदारता से बाँटें।
- उसकी दाख की बारी में निष्ठापूर्वक परिश्रम करें।
- आने वाली अनन्त फसल की आशा में जिएँ।

आइए भजनकार के साथ कहें: "हमारे परमेश्वर ने पृथ्वी को अद्भुत फसल से आशीष दी है।" कृतज्ञ हृदयों के साथ, हम फसल के प्रभु की सेवा नए उत्साह, नम्रता और विश्वास के साथ करें!

पादरी की मेज से

पास्टर आरोन ग्रिफिथ्स

यू.बी.एम. विश्रांति चर्च, मलाड

हाँ! वास्तव में!! हमारे परमेश्वर ने हमें अपनी प्रचुर फसल से भरपूर व आशीषित किया है। हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुपम नाम में आप सबको अभिवादन करना मेरे लिए अत्यन्त हर्ष और आनंद का विषय है। यह सचमुच एक आनन्दमय अवसर है कि हम इस फसल पर्व के मौसम का उत्सव मनाएँ और परमेश्वर की भलाई और दया के लिए धन्यवाद करें, जो उसने हर एक के जीवन पर उंडेली है। जब परमेश्वर हमें अपनी प्रचुर आशीषें देता है, तब हमारा कर्तव्य है कि हम भी उसका भाग परमेश्वर को लौटाएँ। मसीही विश्वास में "फसल" का अर्थ केवल भौतिक ही नहीं बल्कि आत्मिक भी है। यह न केवल शरद ऋतु की फसल का प्रतीक है, बल्कि आत्माओं के संग्रह का भी चिन्ह है। यह बोने और काटने (बीज और फल) का सिद्धान्त है और साथ ही युग के अंत की याद भी दिलाता है। यह हमें परमेश्वर की व्यवस्था, आत्मिक परिश्रम के महत्व और सुसमाचार फैलाने की जिम्मेदारी पर बल देता है। कई कलीसियाएँ वार्षिक फसल उत्सव मनाती हैं, ताकि परमेश्वर को धन्यवाद दिया जा सके और भूख से पीड़ित लोगों की सहायता हेतु योगदान जुटाया जा सके।

बाइबल में फसल का दृष्टिकोण पुराने नियम में फसल का समय इस्राएलियों के लिए धन्यवाद और उत्सव का समय था। उन्हें आज्ञा दी गई थी कि वे सप्ताहों का पर्व और झोंपड़ियों का पर्व मनाएँ, ताकि परमेश्वर की दी हुई उपज और आशीषों के लिए धन्यवाद कर सकें। इन पर्वों ने उन्हें यह स्मरण दिलाया कि हर आशीष अंततः यहोवा से आती है। नए नियम में यीशु ने फसल को आत्मिक रूपक में बदल दिया। उन्होंने कहा:"फसल तो बहुत है, पर मजदूर थोड़े हैं।" (मत्ती 9:37)। यह वचन प्रचार और सुसमाचार फैलाने की तात्कालिकता को दर्शाता है। फसल उन आत्माओं का प्रतीक है जो परमेश्वर के राज्य का संदेश ग्रहण करने को तैयार हैं। जिस प्रकार किसान को मौसम के समाप्त होने से पहले परिश्रम करना पड़ता है, वैसे ही विश्वासियों को भी समय रहते आत्माओं को प्रभु की ओर लाना है।

फसल न्याय और प्रतिफल का भी प्रतीक है। प्रकाशितवाक्य 14 में अंतिम फसल का वर्णन है, जहाँ परमेश्वर अपने लोगों को अनन्त जीवन में इकट्ठा करता है और दुष्टों को अलग कर देता है। यह विश्वासियों के लिए सांत्वना है कि परमेश्वर अपने जनों को इकट्ठा करेगा, परन्तु यह चेतावनी भी है कि उसे अस्वीकार करने के परिणाम होते हैं। मसीही जीवन में फसल का गहरा महत्व फसल का अर्थ शारीरिक, आत्मिक और भविष्यदर्शी (eschatological) तीनों ही स्तरों पर देखा जाता है। शारीरिक स्तर पर: बाइबल का लोगों के जीवन में फसल कृषि–वास्तविकता थी। इस्राएल की जीविका परमेश्वर की वर्षा और उपजाऊ भूमि पर निर्भर थी। फसल की सफलता को परमेश्वर की आशीष से जोड़ा गया। आत्मिक स्तर पर: पौलुस गलातियों 6:9 में लिखते हैं – "हम भलाई करते-करते हियाव न छोड़ें,

क्योंकि ठीक समय पर यदि हम ढीले न हों तो कटनी काटेंगे।" इसका अर्थ है कि फसल आत्मिक फल है—प्रेम, भलाई और विश्वासयोग्यता, जो मसीह में जड़े हुए जीवन का स्वाभाविक परिणाम है। भविष्यदर्शी स्तर पर: यीशु ने मत्ती 13:24–30 में जंगली पौधों के दृष्टान्त में कहा कि युग के अंत में धर्मियों और अधर्मियों का पृथक्करण होगा, जैसे गेहूँ और जंगली पौधों को अलग करना। प्रकाशितवाक्य 14 में भी पृथ्वी की अंतिम फसल का उल्लेख है, जो परमेश्वर के न्याय की ओर संकेत करती है।

इस प्रकार, फसल केवल आशीष का नहीं, बल्कि परमेश्वर के सामने उत्तरदायित्व का भी प्रतीक है। विश्वासियों के लिए यह अद्भुत है क्योंकि यह अनन्त राज्य की आशा देता है। अद्भुत फसल का विषय – अतीत, वर्तमान और भविष्य अतीत में: इस्राएल के खेतों और पर्वों का हर्षोल्लास। वर्तमान में: कलीसिया का मिशन और विश्वासियों का आत्मिक फल। भविष्य में: परमेश्वर के अनन्त राज्य में अंतिम फसल—उसकी उपस्थिति में सदा के लिए। फसल अद्भुत है क्योंकि यह परमेश्वर की प्रचुरता, परिवर्तन और उद्धार का कार्य है। यह हमें कृतज्ञता, विश्वासयोग्य सेवा और आशापूर्ण प्रतीक्षा के लिए बुलाती है। व्यक्तिगत अनुप्रयोग फसल का समय स्वाभाविक रूप से हमारे हृदयों को कृतज्ञता की ओर ले जाता है। जब खेत उपज से भर जाते हैं और फल इकट्ठा होते हैं, तब हमें स्मरण होता है कि जीवन परमेश्वर के उदार हाथ से ही सम्भलता है। पर यह केवल बाहर की उपज की बात नहीं है, बल्कि भीतर की भी है। हम सब अपने जीवन में बीज बो रहे हैं—अपने शब्दों, चुनावों और कर्मों से। गलातियों 6:9 हमें प्रोत्साहित करता है कि हम थके नहीं, क्योंकि "समय आने पर हम कटनी काटेंगे, यदि हम ढीले न हों।"अंततः फसल हमें अनन्त जीवन की याद दिलाती है। एक दिन परमेश्वर अपनी प्रजा को अपने राज्य में समेटेगा। विश्वासियों के लिए यह अंतिम फसल सबसे अद्भुत होगी—उसकी उपस्थिति में सदा के लिए रहना।

आज का धर्मशास्त्र

प्रोफेसर जोएल लिविंगस्टन
यू.बी.एस., पुणे

भजन संहिता 67:6 – "तब पृथ्वी अपनी उपज देगी; और परमेश्वर, हमारा परमेश्वर, हमें आशीष देगा।"

जब फसल का मौसम हमें घेरे हुए है, हम ठहरकर पृथ्वी की उपज और उन आत्मिक सत्यों पर मनन करते हैं जिन्हें वह प्रकट करती है। भजन संहिता 67:6 यह घोषणा करती है, "तब पृथ्वी अपनी उपज देगी; और परमेश्वर, हमारा परमेश्वर, हमें आशीष देगा।" यह पद, जो स्तुति और मिशन के भजन में अंतर्निहित है, केवल भौतिक प्रचुरता ही नहीं बल्कि आत्मिक फसल के लिए श्रम करने के उस दिव्य आह्वान की ओर इंगित करता है जो परमेश्वर की महिमा करता है और राष्ट्रों को आशीषित करता है। यूनाइटेड बेसल मिशन के फसल संस्करण के लिए, हम बाइबल की उस कथा का अध्ययन करते हैं जिसमें काम का —अदन वाटिका में उसकी दिव्य उत्पत्ति, पाप द्वारा उसका विघटन, मसीह में उसका उद्धार, और नये यरूशलेम में उसकी परिपूर्णता—दिखाई देती है। काम कोई शाप नहीं, बल्कि परमेश्वर के राज्य को बढ़ाने की पवित्र आज्ञा है—यह सत्य उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक प्रतिध्वनित होता है।

काम: परमेश्वर की दिव्य योजना

कुछ मसीही सेवक यह दावा करते हैं कि काम उत्पत्ति 3 में मानव के पतन के बाद शाप बनकर आया, जहाँ परमेश्वर ने मेहनत और काँटों की घोषणा की। परंतु शास्त्र यह दिखाता है कि काम तो आरंभ से ही परमेश्वर की योजना का हिस्सा था। उत्पत्ति 1:27-28 में परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी छवि में रचा और आज्ञा दी: "फलवन्त हो, और बढ़ो; पृथ्वी को भर दो और उसको अपने वश में करो।" यह आज्ञा दंड नहीं बल्कि सृष्टिकर्ता के साथ साझेदारी का दिव्य निमंत्रण थी। पृथ्वी को "अधीन करने" का अर्थ था जंगल को बगीचे में बदलना, अदन—परमेश्वर का पवित्र स्थान—की सीमाओं को पूरी सृष्टि तक बढ़ाना। यह प्रबंध परमेश्वर की महिमा को प्रतिबिंबित करने और उसके साथ उपासना करने का कार्य था।

अदन मात्र एक बगीचा नहीं था; यह पहला मंदिर था जहाँ सृष्टिकर्ता और सृष्टि का मेल होता था। बाइबल की प्रतीकात्मकता इसका समर्थन करती है: अदन का चौकोर स्वरूप पुराने नियम के मंदिर के परमपवित्र स्थान (Holy of Holies) की घनाकार परिपूर्णता का पूर्वाभास था। इसी प्रकार त्रिस्तरीय संरचना—बगीचा, अदन, और बाहरी स्थान—बाद में बने पवित्र स्थानों के अनुरूप थी। नूह का जहाज, जो न्याय के बीच उद्धार का साधन था, तीन मंज़िलों में बँटा था। मूसा, यहोशू, न्यायियों और दाऊद के समय का तम्बू, और सुलैमान का मंदिर—सब इसी पैटर्न पर बने: बाहरी आँगन, पवित्र स्थान, और परमपवित्र स्थान। जैसे फसल के चरण—बोना, सँवारना और काटना—वैसे ही यह संरचना परमेश्वर की निकटता की ओर बढ़ने की यात्रा दर्शाती है।

पाप का विघटन

उत्पत्ति 3 में मनुष्य की असफलता ने इस दिव्य व्यवस्था को तोड़ दिया और पाँच स्तरों पर रिश्ते टूटे: मनुष्य और परमेश्वर के बीच, जिससे आत्मिक निर्वासन हुआ; व्यक्ति के भीतर, जिससे लज्जा और आत्म-विभाजन आया; मनुष्यों के बीच, जिससे दोष और कलह जन्मा; मनुष्य और प्रकृति के बीच, जिससे भूमि काँटों से शापित हुई; और स्वयं प्रकृति के भीतर, जिससे क्षय और हिंसा प्रवेश कर गए। काम, जो सह-रचना का आनंद था, अब बोझिल परिश्रम बन गया। फिर भी, परमेश्वर ने त्यागा नहीं बल्कि उद्धार का वचन दिया। उत्पत्ति 3:15 में "प्रोटो-एवेंजेलियम"—पहला सुसमाचार—घोषित करता है कि स्त्री की संतान साँप पर विजय पाएगी। यह मसीह की ओर संकेत करता है, जो दूसरा आदम है और परमेश्वर की सनातन योजना का आधार है।

मसीह द्वारा काम और रिश्तों का उद्धार

मसीह का अवतार इसी वचन की पूर्ति है, जिसने काम और टूटे हुए रिश्तों दोनों का उद्धार किया। रोमियों 5:12-21 में पौलुस लिखता है कि जहाँ पहले आदम ने मृत्यु लाई, वहाँ दूसरा आदम जीवन लाता है। यीशु ने व्यवस्था, भविष्यवक्ताओं और लेखों को पूरा किया, और पूर्ण मनुष्य बनकर आज्ञाकारिता के द्वारा सृष्टि को अधीन किया। उनकी शिक्षा में "प्रतिभाओं का दृष्टांत" (मत्ती 25) यही दर्शाता है कि राज्य का कार्य उत्पादक और उत्तरदायी होना चाहिए। जो दास पाँच प्रतिभाओं को दस बनाता है, उसकी प्रशंसा होती है; परंतु आलसी दास, जो अपनी प्रतिभा गाड़ देता है, अन्धकार में फेंका जाता है। यह दृष्टांत बताता है कि राज्य का काम अधिक आशीष और अधिक उत्तरदायित्व लाता है—जैसे भरपूर फसल।

मसीह ने मंदिर के प्रतिरूप को भी बदल दिया। उनके क्रूस पर मरते समय मंदिर का परदा फट गया (मत्ती 27:51), जो परमेश्वर की उपस्थिति में सबके लिए पहुँच का प्रतीक था। अब यीशु स्वयं मंदिर हैं (यूहन्ना 2:19-21), और विश्वासियों के शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर हैं (1 कुरिन्थियों 6:19)। इस प्रकार हर काम अब परमेश्वर की उपासना है।

नया यरूशलेम: अनन्त अदन

प्रकाशितवाक्य 21-22 इस उद्धार को पूर्ण करता है। नया यरूशलेम स्वर्ग से उतरता है, एक पूर्ण घनाकार नगर के रूप में—पुनः स्थापित अदन, जहाँ परमेश्वर सदा अपने लोगों के साथ वास करता है। यहाँ न कोई शाप, न आँसू—केवल आशीष और वृद्धि है। वहाँ मंदिर की आवश्यकता नहीं, क्योंकि "प्रभु परमेश्वर सर्वशक्तिमान और मेम्ना ही उसका मंदिर हैं" (प्रका. 21:22)। जीवन का नदी बहती है, पेड़ निरंतर फल देते हैं, और राष्ट्र अपनी महिमा उसमें लाते हैं। यह दृश्य भजन संहिता 67 की प्रार्थना से मेल खाता है: "ताकि तेरे मार्ग पृथ्वी पर, और तेरे उद्धार सब जातियों में प्रगट हों" (पद 2)। जैसे खेत अनाज देते हैं, वैसे ही परमेश्वर के लोग चेलों को उत्पन्न करते हैं।

त्रिस्तरीय प्रगति और हमारा मिशन

अदन से लेकर तम्बू, मंदिर और अब विश्वासियों के हृदय तक की त्रिस्तरीय प्रगति नये यरूशलेम में एकता पाती है। अब सब भूमि पवित्र है। हम इस पवित्र स्थान का भाग बनते हैं जब हम रिश्तों को मिलाते हैं, सृष्टि का प्रबंधन करते हैं और उद्धार का प्रचार करते हैं। आलसी दास की सजा हमें चेताती है, जबकि विश्वासयोग्य दास की प्रशंसा हमें प्रेरित करती है—अधिक कार्य, अधिक उत्तरदायित्व, अधिक फसल।

निष्कर्ष

फसल का मौसम हमें ; हमारे दिव्य बुलावे की याद दिलाता है—परमेश्वर के राज्य के लिए कार्य करना। अदन की आज्ञा से लेकर, पाप

के विघटन, मसीह के उद्धार और नये यरूशलेम के अनन्त बगीचे तक, काम ही हमारी उपासना है। मसीही होने के नाते हमें इस सत्य को अपनाना है और सुसमाचार प्रचार, सेवा और पवित्र जीवन के द्वारा परमेश्वर के राज्य को बढ़ाना है।

जैसे किसान धैर्यपूर्वक बोता, सँवारता और काटता है, वैसे ही हम भी विश्वास करते हैं कि "तब पृथ्वी अपनी उपज देगी, और परमेश्वर, हमारा परमेश्वर, हमें आशीष देगा" (भजन 67:6)। हम निष्ठापूर्वक श्रम करें ताकि उसकी महिमा और सब राष्ट्रों के उद्धार के लिए वृद्धि प्राप्त हो।

आज की आध्यात्मिकता

रैव. ग्लैडसन सी. करकड़ा
यू.बी.एम. क्रिस्टा महिमा चर्च, वसई

"हमारे परमेश्वर ने धरती को अद्भुत फसल से आशीषित किया है।" – भजन 67:6

फसल का मौसम कृतज्ञता, मनन और आनंद का समय है। यह वह ऋतु है जब परमेश्वर द्वारा अद्भुत रूप से रची गई धरती, देखभाल और धैर्य से बोए गए बीजों का भरपूर प्रतिफल देती है। आज की दुनिया में आत्मिकता को अक्सर एक दूर और जीवन से अलग विषय समझा जाता है। परन्तु बाइबल हमें याद दिलाती है कि आत्मिकता का अर्थ है परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीवन जीना और उसके आशीर्वादों को जीवन के हर क्षेत्र में पहचानना। भजन 67:6 कहता है, "पृथ्वी अपनी उपज देगी; हमारा परमेश्वर हमें आशीष देगा।" आज इस वचन को न केवल भौतिक आशीष के वादे के रूप में देखा जा सकता है, बल्कि आत्मिक जीवन को संवारने और विश्वास, प्रेम तथा भलाई के कार्यों की फसल काटने के लिए भी यह प्रेरणा है। जिस प्रकार किसान अपने बीजों के अंकुरित होने पर भरोसा करता है, उसी प्रकार हम भी विश्वास करते हैं कि परमेश्वर अपने समय पर हमें आशीष देगा। वास्तव में, हर फसल – चाहे अनाज की हो या आशीषों की – परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को दर्शाती है और हमें कृतज्ञता और उदारता से प्रत्युत्तर देने के लिए आमंत्रित करती है।

फसल में परमेश्वर को देखना

फसल हमें यह सिखाती है कि प्रकृति और जीवन दोनों में परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को पहचानें। मिट्टी को गर्म करने वाली धूप, पौधों को सींचने वाली वर्षा और उपजाऊ भूमि – सब परमेश्वर के उपहार हैं। इसी तरह हमारे दैनिक जीवन में उसकी दया, उसकी कृपा और हर ऋतु में उसकी विश्वासयोग्यता हमें संभालती है। हर फसल, चाहे बड़ी हो या छोटी, उसके उदार प्रेम का प्रमाण है। जब हम इन आशीषों को पहचानते हैं, तब हमारे हृदय में कृतज्ञता की भावना बढ़ती है और हमारी आत्मिकता गहरी होती है।

आत्मिकता और व्यक्तिगत विकास की फसल

आज की आत्मिकता व्यक्तिगत विकास पर भी बल देती है – वह आंतरिक फसल जो धैर्य, करुणा और विश्वासयोग्यता जैसे गुणों की खेती करने से प्राप्त होती है। व्यस्त और विचलित करने वाली दुनिया में इन गुणों को विकसित करना सचेत प्रयास माँगता है। जैसे बीज रातोंरात नहीं उगते, वैसे ही परमेश्वर की आत्मिक आशीष समय और धैर्य माँगते हैं। ध्यान, शास्त्र पठन, धर्ममय जीवन और सेवा के कार्य – ये सब भलाई के बीज बोने के मार्ग हैं जो एक अद्भुत आत्मिक फसल उत्पन्न करते हैं।

समुदाय की आशीष

परमेश्वर कीआशीष केवल व्यक्ति के लिए नहीं, बल्कि परिवारों और समुदायों के लिए भी है। जब भूमि उपज देती है, तो यह परिवारों

को पोषण देती है, समुदायों को मजबूत बनाती है और जरूरतमंदों के लिए साधन उपलब्ध कराती है। आत्मिकता हमें सिखाती है कि ये आशीष केवल हमारे लिए नहीं, बल्कि सबके लिए हैं। भजन 67 भूमि की फसल को सबके लिए बताता है। प्रेम, सेवा और उदारता के कार्य परमेश्वर की भलाई का प्रतिबिंब हैं। हर छोटा योगदान भी दूसरों के लिए आनंद और आशा की फसल बन सकता है।

तकनीक और आत्मिक जागरूकता

आज की दुनिया में तकनीक हमारे जीवन का बड़ा हिस्सा बन चुकी है। स्मार्टफोन, सोशल मीडिया और त्वरित संचार ने आत्मिकता के अनुभव को भी बदल दिया है। जहाँ ये साधन ध्यान भटकाते हैं, वहीं ये आशीष बाँटने, दूसरों को प्रेरित करने और दुनिया भर की आत्मिक शिक्षाओं तक पहुँचने का अवसर भी देते हैं। आज एक विश्वासी उपदेश ऑनलाइन सुन सकता है, प्रार्थना समूहों में शामिल हो सकता है या उत्साहजनक संदेश साझा कर सकता है। इस प्रकार परमेश्वर की फसल भौतिक सीमाओं से परे फैलती है।

आत्मिकता की चुनौतियाँ

अवसरों के बावजूद, आज का जीवन आत्मिक विकास में बाधाएँ भी लाता है। तनाव और भौतिक सफलता की खोज हमें परमेश्वर की आशीषों को भूलने पर मजबूर कर सकती है। आज की आत्मिकता सजगता माँगती है – आंतरिक शांति, धर्ममय जीवन और सार्थक संबंधों को क्षणिक सुखों से ऊपर महत्व देना। यह एक सचेत चुनाव है – प्रेम, धैर्य और उदारता की फसल को जीवन की व्यस्तता के बीच भी उगाना।

कृतज्ञता और उदारता

आधुनिक आत्मिकता कृतज्ञता और उदारता पर ज़ोर देती है। परमेश्वर की आशीषों को स्वीकार करना हमें ज़िम्मेदारी से जीने के लिए प्रेरित करता है – सृष्टि की देखभाल करना, दूसरों की सेवा करना और अपनी प्रतिभाओं का बुद्धिमानी से उपयोग करना। हर फसल – चाहे भौतिक हो या आत्मिक – एक उत्तरदायित्व लेकर आती है: उदारता से बाँटना, धर्मपूर्वक जीना और हर कार्य में परमेश्वर का आदर करना। इसी में हमारे जीवन भजनकार की गवाही को प्रकट करते हैं: परमेश्वर हमें आशीष देता है और हमारी आशीषें दूसरों तक पहुँचती हैं। जितना अधिक हम बाँटते हैं, उतना ही आत्मिक फसल बढ़ती है, जो हमारे और दूसरों के जीवन को विश्वास, शांति और परमेश्वर से गहरे संबंध से भर देती है।

फसल का आत्मिक प्रतीक

जिस प्रकार धरती अपनी फसल देती है, उसी प्रकार हमारा आत्मिक जीवन भी फसल देता है जब हम उसे विश्वासयोग्यता से सँवारते हैं। यह फसल हमेशा भौतिक रूप में दिखाई न दे, लेकिन यह बदले हुए हृदयों, सुधरे हुए संबंधों, भलाई के कार्यों और आंतरिक संतोष में प्रकट होती है। हर उत्तरित प्रार्थना, हर सेवा का कार्य और हर करुणा का क्षण – ये सब हमारे जीवन में परमेश्वर की आशीषों का प्रमाण हैं। जैसे फसल को समय चाहिए, वैसे ही आत्मिक विकास को भी धैर्य और देखभाल चाहिए। यह समझ हमें परमेश्वर के निरंतर कार्य को सराहने में मदद करती है और हमें विश्वासयोग्य और कृतज्ञ जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है।

फसलमय जीवन जीना

आज की व्यस्त दुनिया में हम अपनी दिनचर्या और जिम्मेदारियों के बीच परमेश्वर की आशीषों को नज़रअंदाज कर सकते हैं। हम चुनौतियों, सूखे या असफलताओं का सामना कर सकते हैं, परन्तु परमेश्वर की आशीषें हमें यह भरोसा दिलाती हैं कि आगे अद्भुत फसल है। भजन 67:6 हमें आश्वासन देता है कि “पृथ्वी अपनी उपज देगी और परमेश्वर अपनी प्रजा को आशीष देगा।” यह आशा हमारे विश्वास को मजबूत करती है और हमें धैर्यपूर्वक चलते रहने की प्रेरणा देती है, यह जानते हुए कि हर बोया हुआ बीज समय पर प्रतिफल लाएगा। आज की आत्मिकता का अर्थ है इन आशीषों को पहचानना, उन्हें उदारता से बाँटना और प्रेम, शांति और आनंद की ऐसी फसल तैयार करना जो हमारे जीवन में परमेश्वर की भरपूर भलाई को प्रकट करे।

आइए हम कृतज्ञता, विश्वासयोग्यता और उदारता के साथ जियें और अपने परमेश्वर द्वारा दी गई अद्भुत फसल में आनंद मनाएँ।

नेतृत्व आज

श्री बिजु उम्मेन
अध्यक्ष वाई.एम.सी.ए. अंबरनाथ

फसल का मौसम हमें स्मरण कराता है कि परमेश्वर विश्वासयोग्य है। बाइबल के समय में लोग भरे हुए खलिहान देखकर परमेश्वर की भलाई का उत्सव मनाते थे। आज भले ही हममें से अधिकांश खेतों में काम न करते हों, फिर भी हम अपने-अपने जीवन में "फसल" का अनुभव करते हैं—शैक्षिक परिणामों में, करियर की उपलब्धियों में, आर्थिक स्थिरता में, स्वस्थ परिवारों में या सामुदायिक विकास में। हर फसल के पीछे केवल कठिन परिश्रम ही नहीं, बल्कि परमेश्वर का आशीर्वाद भी होता है।

आधुनिक जीवन में नेतृत्व की तुलना खेती से की जा सकती है। जैसे किसान मिट्टी तैयार करता है, बीज बोता है और वर्षा की प्रतीक्षा करता है, वैसे ही आज का अगुआ लोगों को तैयार करता है, मूल्यों के बीज बोता है और वृद्धि के लिए परमेश्वर पर भरोसा करता है। फसल केवल अनाज तक सीमित नहीं है; यह ऐसा फलदायी जीवन है जो दूसरों को आशीष देता है।

एक युवा स्टार्ट-अप संस्थापक ने कहा था, "मेरी कंपनी की सफलता एक दिन में नहीं आई। तीन वर्षों तक हम देर रात तक काम करते रहे, असफलताओं का सामना किया और बहुत कम कमाया। लेकिन मैं अपनी टीम को लगातार याद दिलाता रहा: यह हमारा बोने का मौसम है, हार मत मानो।"
जब सफलता आखिरकार आई, तो टीम ने केवल लाभ ही नहीं मनाया, बल्कि उस धैर्य, दृष्टि और एकता का उत्सव मनाया जिसने उन्हें आगे बढ़ाए रखा। यही फसल का सिद्धांत है: आज जो बोओगे, कल वही काटोगे।

आज की दुनिया के लिए नेतृत्व के पाठ
1. सफलता में कृतज्ञता:
हमारी तेज़-तर्रार दुनिया में नेता जल्दी से श्रेय लेने लगते हैं। लेकिन फसल हमें याद दिलाती है: प्रचुरता परमेश्वर का उपहार है। चाहे प्रमोशन हो, स्वास्थ्य हो या उपलब्धियाँ, नेताओं को परमेश्वर का हाथ स्वीकार करना चाहिए। कृतज्ञता नेतृत्व को सच्चा रखती है और घमंड से बचाती है।

2. लोगों में मूल्यों के बीज बोना:
परिवारों, कार्यस्थलों और कलीसियाओं में अगुआ बीज बोने वालों के समान हैं। उत्साहजनक शब्द, दयालुता के कार्य और सत्यनिष्ठा के निर्णय वे "बीज" हैं जो आने वाले कल की संस्कृति को गढ़ते हैं। जैसे कोई शिक्षक जो कमजोर छात्रों में धैर्यपूर्वक निवेश करता है, तुरंत परिणाम न देख पाए—पर वर्षों बाद उसकी "फसल" सफल, आत्मविश्वासी वयस्कों के रूप में सामने आती है।

3. तेज़ युग में धैर्य:
हम तात्कालिक कॉफ़ी, तात्कालिक ऐप्स और तात्कालिक परिणामों की दुनिया में जीते हैं। लेकिन नेतृत्व कभी भी तात्कालिक नहीं होता। फसल की तरह, वृद्धि में समय लगता है। बच्चे पालने वाले माता-पिता हों, कलीसिया का नेतृत्व करने वाले पास्टर हों, या युवा कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने वाले प्रबंधक—सबको याद रखना चाहिए: अधैर्य वृद्धि को नष्ट करता है, जबकि धैर्य उसे पोषित करता है।

4. ज़िम्मेदार फसल
आधुनिक जीवन में फसल का अर्थ धन, शक्ति या प्रभाव भी हो सकता है। पर हम उसका उपयोग कैसे करते हैं? जिस प्रकार शास्त्र ने खेत का कुछ हिस्सा गरीबों के लिए छोड़ने की आज्ञा दी थी, उसी प्रकार आज के अगुओं को भी अवसर साझा करने चाहिए। कोई CEO जो युवा उद्यमियों का मार्गदर्शन करता है, या कोई कलीसिया जो सामुदायिक कल्याण में निवेश करती है, यह परमेश्वरनिष्ठ नेतृत्व दर्शाती है। सच्ची फसल वही है जो बाँटी जाती है।

5. अगले मौसम की तैयारी:
फसल अंत नहीं, बल्कि अगले चक्र की शुरुआत है। जो अगुए सब कुछ अपने पास रखते हैं, वे वृद्धि को सीमित कर देते हैं। महान नेतृत्व दूसरों को सक्षम बनाता है। कोई माता-पिता जो बच्चों को विश्वास में प्रशिक्षित करता है, कोई मार्गदर्शक जो कनिष्ठों को सामर्थ देता है, या कोई कलीसिया का अगुआ जो भविष्य के अगुओं को तैयार करता है—वही सुनिश्चित करता है कि आज की फसल कल तक बनी रहे।

आज नेतृत्व करने का आह्वान
हमारी दुनिया तेज़ी से बदल रही है—नई तकनीकें, बदलती संस्कृतियाँ और बढ़ती चुनौतियाँ। लेकिन फसल का सिद्धांत अपरिवर्तित है: जो बोओगे, वही काटोगे। जो अगुए आज विश्वास, सत्यनिष्ठा और करुणा से बोते हैं, वे कल एक अद्भुत फसल देखेंगे।

इस फसल पर्व पर हम केवल अपनी थालियों में भोजन के लिए परमेश्वर का धन्यवाद न करें, बल्कि यह भी मनन करें:

मैं अपने परिवार, कार्यस्थल या कलीसिया में कौन-से बीज बो रहा हूँ?

क्या मैं परमेश्वर के समय पर भरोसा करने के लिए पर्याप्त व धैर्यवान हूँ?

मैं अपनी आशीषें दूसरों के साथ कैसे बाँट रहा हूँ?

भजन संहिता 67:6 घोषणा करता है: "हमारे परमेश्वर ने पृथ्वी को अद्भुत फसल से आशीष दी है।" यह आशीष केवल अन्न के खेतों के लिए नहीं है—यह हमारे जीवनों, हमारे संबंधों, और हमारे समुदायों के लिए भी है। परमेश्वर हमें आज नेतृत्व करने के लिए बुला रहे हैं—कृतज्ञता, दृष्टि, धैर्य, उदारता और ज़िम्मेदारी के साथ।
जब हम इस प्रकार नेतृत्व करेंगे, तो हमारी आधुनिक फसल केवल सफलता तक सीमित नहीं होगी—वह महत्व और गहरे अर्थ से भर जाएगी। और आने वाली पीढ़ियाँ उन बीजों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करेंगी, जिन्हें हमने आज बोया।

मकारियोस

पास्टर दीक्षा एलाइजर
यू.बी.एम. चर्च, कल्याण

प्रस्तावना
यूनानी शब्द मकारियोस, जिसका अनुवाद प्रायः "धन्य" किया जाता है, उस जीवन की ओर संकेत करता है जो समृद्धि, आनन्द और दिव्य कृपा से चिह्नित है। यह केवल भौतिक सम्पत्ति या बाहरी सफलता नहीं है—यह परमेश्वर के अनुग्रह में निहित जीवन की पूर्णता है। भजन संहिता 67:6 इसी सत्य को प्रकट करता है: भूमि की फलवन्त फसल परमेश्वर के अदृश्य आशीर्वाद का दृश्यमान चिन्ह है।

फसल वाचा के चिन्ह के रूप में
पुराने नियम में फसल परमेश्वर की वाचा की विश्वासयोग्यता का प्रतीक थी। इस्राएल की प्रचुर उपज कभी संयोग नहीं थी; यह इस बात की गवाही देती थी कि जब वे आज्ञाकारिता में चलते थे, तब परमेश्वर ने उन्हें आशीर्वाद देने की प्रतिज्ञा पूरी की (व्यवस्था विवरण 28)। हर एक पूले और अंगूर की हर एक घनी झाड़ी, परमेश्वर की व्यवस्था की याद दिलाती थी। फिर भी होशे जैसे भविष्यद्वक्ताओं ने यह चेतावनी दी कि आशीर्वाद को केवल भौतिक लाभ तक सीमित न किया जाए, क्योंकि सच्ची फसल उस परमेश्वर को प्रकट करता है जो व्यवस्था को पूरा करता है न कि केवल उपज को।

मसीह पहिली उपज के रूप में
नए नियम में फसल का चित्र यीशु मसीह में अपनी परिपूर्णता को पाता है। उन्होंने कहा कि "खेत काटने के लिये पक चुके हैं" (यूहन्ना 4:35), जो इस ओर संकेत करता है कि लोगों को परमेश्वर के राज्य में बटोरा जाएगा। फसल का आशीर्वाद सार्वभौमिक हो जाता है—केवल इस्राएल के लिए नहीं, बल्कि सब जातियों के लिए। और भी, मसीह स्वयं "पहिली उपज" कहलाए (1 कुरिन्थियों 15:20)। जिस प्रकार पहली अनाज की भेंट शेष उपज की गारंटी देती थी, उसी प्रकार यीशु का पुनरुत्थान विश्वासियों के लिये अनन्त जीवन का आश्वासन है। यही मकारियस का सबसे गहन रूप है—वह जीवन जो मृत्यु पर जय पाता है।

अन्तिम फसल की आशा
फसल में एक परलोकविज्ञानिक (eschatological) पहलू भी है। प्रकाशितवाक्य 14:15 में मनुष्य के पुत्र को समय के अन्त में पृथ्वी की फसल काटते हुए दिखाया गया है। वर्तमान की प्रत्येक फसल उस परम अन्तिम बटोर का पूर्वाभास है, जब परमेश्वर अपने लोगों को अपने अनन्त राज्य में ले आएगा। सांसारिक प्रचुरता आती-जाती रहती है, परन्तु उद्धार की अन्तिम फसल मसीह में सुरक्षित है।

आशीर्वाद से मिशन तक
भजन संहिता 67 यह स्पष्ट करता है कि परमेश्वर के आशीर्वाद केवल स्वार्थपूर्ण उपभोग के लिये नहीं हैं। "परमेश्वर हम पर अनुग्रह करे

और हमें आशीष दे… ताकि तेरे मार्ग पृथ्वी पर प्रगट हों” (पद 1–2)। आशीर्वाद मिशन की ओर ले जाता है। हमें सौंपी गई अद्भुत फसल—चाहे वह भौतिक हो, सम्बन्धों की हो, या आत्मिक—इस प्रकार दी गई है कि वह उदारता, न्याय और गवाही में प्रवाहित हो। मकारियोस जीवन वही है; जो दूसरों के लिए आशीर्वाद का माध्यम बनता है।

निष्कर्ष

भजन संहिता 67:6 केवल कृषि की प्रचुरता के लिये धन्यवाद नहीं है। यह परमेश्वर की वाचा-प्रेम, मसीह के पुनरुत्थान और अन्तिम फसल की आशा की ओर संकेत करता है। सच्चा आशीर्वाद हमारे खलिहानों में भरे अन्न से नहीं, बल्कि हमारे जीवन में परमेश्वर की उपस्थिति और उसके मिशन से मापा जाता है। मकारियोस जीवन वह है जो कृतज्ञता में जीता है, उदारता से बाँटता है, और आनन्दपूर्वक उस अनन्त फसल की प्रतीक्षा करता है ,जिसे मसीह लेकर आएगा।

परुसिया

रैव. सैमुअल टाटगिरी

यू.बी.एम .बैथेल चर्च ,अंबरनाथ

फसल का अर्थ समझना: बाइबल आधार और आध्यात्मिक चिंतन

फसल वह प्रक्रिया है जिसमें खेत से पके हुए अन्न और उपज को इकट्ठा किया जाता है। यह बोआई और उगने की ऋतु का अंत है—वह समय जब किसान अपने श्रम का फल देखता है। सफल फसल अन्न–भंडार, आय और अगली बुवाई के लिए बीज सुनिश्चित करती है। इसलिए यह किसानों के लिए हर्ष और उत्सव का मौसम होता है।

लेकिन सच्चा हर्ष केवल सफल फसल से ही आता है। और यह सफलता केवल मानव के प्रयास, कौशल या बुद्धि पर नहीं, बल्कि अंततः परमेश्वर और उसके अनुग्रह पर निर्भर है। चाहे किसान कितना ही परिश्रम करे, फसल प्राकृतिक आपदा या अप्रत्याशित परिस्थितियों से नष्ट हो सकती है। इसलिए उत्तम फसल वास्तव में परमेश्वर का आशीर्वाद है।

बाइबल में इस्राएलियों के लिए फसल का अर्थ क्या था?

इस्राएलियों के लिए फसल केवल कृषि घटना ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक अनुभव भी था। इसमें जौ, गेहूँ, फल और सब्ज़ियों का संग्रह शामिल था। लेकिन इसके पीछे गहरा धार्मिक अर्थ भी था—परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति धन्यवाद और प्रतिज्ञात देश में उनके साथ की गई वाचा।

फसल का समय उपासना और धन्यवाद का समय था। इस्राएली जानते थे कि यह परमेश्वर की सीधी आशीष है:

> "यदि तुम आज मैं जो आज्ञा देता हूँ उसे ध्यानपूर्वक मानो... तब मैं तुम्हारे देश में उचित समय पर वर्षा दूँगा... और तुम अन्न, नयी दाखरस और तेल इकट्ठा करोगे।"
— व्यवस्था विवरण 11:13–15

इस्राएल में तीन मुख्य फसल पर्व

1. पहली उपज का पर्व (पास्का / जौ की फसल)
- परमेश्वर को पहली उपज का अर्पण (लैव्यव्यवस्था 23:10–11)।

2. सप्ताह का पर्व (शाबोत / पिन्तेकुस्त – गेहूँ की फसल)
- पहली उपज के सात सप्ताह बाद मनाया जाता था; पूरी फसल के लिए धन्यवाद (निर्गमन 34:22)।

3. झोंपड़ियों का पर्व (सुक्कोत / फल–सब्ज़ियों की फसल)
- वर्ष की अंतिम फसल का उत्सव (लैव्यव्यवस्था 23:39–43)।

आध्यात्मिक अर्थ

इस्राएलियों के लिए फसल, परमेश्वर की विश्वासयोग्यता और उनके साथ की गई वाचा का चिन्ह थी। इससे स्मरण दिलाया जाता था कि

भूमि और उपज परमेश्वर की है और उसका आशीर्वाद उसी की प्रेमपूर्ण प्रतिज्ञा का फल है।

प्रारम्भिक कलीसिया के लिए फसल का अर्थ क्या था?
प्रारम्भिक कलीसिया के लिए फसल का अर्थ गहरे आध्यात्मिक रूप में लिया गया—आत्माओं को परमेश्वर के राज्य में लाना।

यीशु ने कई बार फसल का उदाहरण मिशन के लिए दिया:

> "कटनी तो बहुत है, परन्तु मजदूर थोड़े हैं। इसलिए कटनी के स्वामी से बिनती करो कि वह अपनी कटनी के लिए मजदूर भेजे।"
— मत्ती 9:37–38

पिन्तेकुस्त का दिन – आत्माओं की फसल
प्रेरितों के काम 2 में पिन्तेकुस्त के दिन लगभग 3,000 लोगों ने विश्वास किया और बपतिस्मा लिया। यह कलीसिया की पहली महान आत्मिक फसल थी।

यीशु प्रथम फल के रूप में
"परन्तु अब मसीह मृतकों में से जी उठे हैं; और जो सो गये हैं उनमें से वह प्रथम फल हैं।"
— 1 कुरिन्थियों 15:20

यीशु का पुनरुत्थान उस महान फसल का प्रथम फल है, जो विश्वासियों के पुनरुत्थान और उद्धार के रूप में आने वाली है।

आज हमारे लिए फसल का अर्थ क्या है?
आज हममें से बहुत से लोग शहरों में रहते हैं और किसान की तरह फसल का अनुभव नहीं करते। शायद इसी कारण हम परमेश्वर की दी हुई आशीषों के लिए सच्चा धन्यवाद करना भूल जाते हैं।

व्यस्त जीवन में हम परमेश्वर को अपना समय, धन और प्रतिभा अर्पित करने में उदासीन हो जाते हैं। कई बार हमारे उत्सव केवल परम्परा या आदत बनकर रह जाते हैं, न कि सच्ची उपासना और कृतज्ञता के भाव।

फसल हमारे लिए कैसे अद्भुत हो सकती है?
हालाँकि परमेश्वर अब हमसे भौतिक अर्पण की अपेक्षा नहीं करता,परन्तु वह आज भी हमारे हृदय की इच्छा रखता है। जब हम विश्वास से अपनी अर्पणाएँ—चाहे आत्मिक हों या भौतिक—उसके सामने लाते हैं, तो हम उसकी विश्वासयोग्यता और अपने जीवन में उसकी वाचा को स्वीकार करते हैं।

भजन संहिता 67:6 कहती है:
"पृथ्वी अपनी उपज देती है; हमारा परमेश्वर, हमें आशीर्वाद देता है।" (NIV)
"हमारे परमेश्वर ने पृथ्वी को अद्भुत फसल से आशीर्वाद दिया है।" (हिंदी बाइबल)

यह पद कृतज्ञता और परमेश्वर की आशीष की स्वीकृति दोनों को दर्शाता है।

फसल और मसीह का दूसरा आगमन
यूनानी शब्द Parousia का अर्थ है "आगमन।" बाइबल में यह मसीह के दूसरे आगमन की ओर संकेत करता है:

> "और हम जो जीवित बचेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिये जायेंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें।"
— 1 थिस्सलुनीकियों 4:17

जिस प्रकार फसल के समय दाने को भूसे से अलग किया जाता है, उसी प्रकार आत्माओं की फसल में विश्वासयोग्य और अविश्वासियों का विभाजन होगा।

सच्चे धन्यवाद और समर्पण का आह्वान

इस **"अद्भुत फसल"** के उत्सव में हम:

- परमेश्वर को सभी आशीषों का स्रोत मानें।
- समझें कि उसके अनुग्रह के बिना कोई भी श्रम फल नहीं दे सकता।
- कृतज्ञता हमारे हृदयों से बहे, न कि केवल होठों से।
- परमेश्वर के लिए केवल अर्पण ही नहीं, बल्कि आत्माओं को भी लाएँ।

तब जब मसीह लौटेंगे, हम भी उसकी खलिहान में उपयोगी अन्न के समान इकट्ठे किए जाएँगे और भूसा अलग कर दिया जाएगा।

मिशनरी कहानी

रैव. जॉन एलाइजर

यू.बी.एम. क्रिस्ता प्रीति चर्च, भांडुप

रेव. हरमन एफ. मोग्लिंग — मिशनरी, भाषाविद् और आधुनिक कन्नड़ पत्रकारिता के जनक

हरमन फ्रेडरिक मोग्लिंग (1811–1881) दक्षिण-पश्चिम भारत में बेसल मिशन के एक युवा मिशनरी के रूप में आए, लेकिन उन्होंने केवल कलीसियाई कार्यों तक सीमित न रहकर एक ऐसी विरासत छोड़ी, जिसने कर्नाटक की भाषा और सांस्कृतिक पहचान को गहराई से प्रभावित किया। उस समय जब औपनिवेशिक भारत नई संस्थाओं के माध्यम से बदल रहा था, मोग्लिंग कन्नड़ भाषा और साहित्य के अप्रत्याशित लेकिन सशक्त समर्थक बनकर उभरे। उन्होंने पहला कन्नड़ समाचारपत्र शुरू किया, शास्त्रीय कन्नड़ ग्रंथों का संपादन और प्रकाशन किया, शिक्षा को प्रोत्साहित किया और उस क्षेत्र के सांस्कृतिक जीवन को इस प्रकार आकार दिया, जिसकी गूंज आज भी कर्नाटक में सुनाई देती है।

प्रारंभिक जीवन और भारत आगमन

मोग्लिंग का जन्म 1811 में जर्मनी के ब्रैकनहाइम में हुआ था। उन्होंने बेसल मिशन में प्रशिक्षण लिया और 1830 के दशक में भारत की पश्चिमी तटरेखा की ओर प्रस्थान किया। 1836 में वे एक युवा मिशनरी के रूप में मैंगलोर पहुँचे। यद्यपि उनका औपचारिक कार्य सुसमाचार का प्रचार करना था, परंतु शीघ्र ही उन्होंने स्थानीय भाषाओं के अध्ययन और साहित्यिक-सांस्कृतिक वातावरण को समझने में अपनी ऊर्जा समर्पित कर दी — यही उनकी भारत की जीवन-यात्रा की दिशा तय करने वाला निर्णय था।

कन्नड़ सीखना और संस्कृति से जुड़ने का निर्णय

मोग्लिंग को उनके समकालीनों से अलग करने वाली बात उनकी भाषाई जिज्ञासा थी। कुछ ही वर्षों में उन्होंने कन्नड़ भाषा में इतनी दक्षता प्राप्त कर ली कि वे इसमें लेखन, अनुवाद और संपादन कर सके। वे स्थानीय समुदायों से उनकी ही भाषा में संवाद करते थे। उस समय जब कई मिशनरियों ने अंग्रेज़ी का सहारा लिया, मोग्लिंग ने मातृभाषा को शिक्षा और संवाद का माध्यम बनाया। इसी निर्णय ने उनके आगे के सभी प्रयासों को आकार दिया — प्रिंटिंग प्रेस स्थापित करना, साहित्य का संपादन, व्याकरण और शब्दकोश पर कार्य करना, और कन्नड़ जनता के लिए पहला समाचारपत्र प्रकाशित करना।

मैंगलूरु समाचार — पहला कन्नड़ समाचारपत्र

1 जुलाई 1843 को मोग्लिंग ने मैंगलूरु समाचार (मैंगलोर समाचार पत्र) का पहला अंक प्रकाशित किया। यह कन्नड़ भाषा का पहला समाचारपत्र माना जाता है। पत्थर की स्लैब पर मुद्रित इस पाक्षिक पत्र में स्थानीय समाचार, घोषणाएँ और समाज को शिक्षित करने वाले लेख प्रकाशित किए जाते थे। 1840 के दशक में किसी भारतीय भाषा में समाचारपत्र निकालना अपने आप में एक साहसिक

कार्य था। मोग्लिंग ने इसे कन्नड़ लिपि में प्रकाशित कर कन्नड़ पढ़ने वाले समाज को संबोधित किया। यही प्रयास आगे चलकर आधुनिक कन्नड़ सार्वजनिक जीवन की नींव बना। इसीलिए 1 जुलाई को आज भी कन्नड़ प्रेस दिवस के रूप में मनाया जाता है

बिब्लियोथेका कर्नाटका और शास्त्रीय ग्रंथों का संरक्षण

पत्रकारिता से आगे बढ़कर मोग्लिंग ने कन्नड़ साहित्य को संरक्षित करने का कार्य भी किया। उन्होंने बिब्लियोथेका कर्नाटका नामक श्रृंखला आरंभ की, जिसमें लोकगीत, हरिदास संकीर्तन, पुराण कथाएँ और अन्य शास्त्रीय कन्नड़ ग्रंथों का संग्रह और प्रकाशन किया गया। मुद्रण-संस्कृति के अभाव में ये ग्रंथ केवल मौखिक परंपरा या पांडुलिपियों तक सीमित थे, किंतु मोग्लिंग के प्रयासों से वे व्यापक पाठक-वर्ग तक पहुँचे। इस विशाल कार्य के लिए उन्हें 1858 में जर्मनी की ट्यूबिंगन विश्वविद्यालय ने मानद डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की।

शिक्षा, समुदाय-निर्माण और मिशन कार्य

मोग्लिंग ने शिक्षा और संस्थाओं के निर्माण में भी योगदान दिया। उन्होंने मैंगलोर में बेसल इवैंजेलिकल मिशन सेमिनरी की स्थापना में प्रमुख भूमिका निभाई, जो आगे चलकर कई शैक्षणिक और धार्मिक संस्थानों का आधार बना। उनकी पत्नी पौलीन के साथ उन्होंने विशेषकर बालिकाओं की शिक्षा में कार्य किया।

कोडगु (कूर्ग) जैसे आंतरिक क्षेत्रों में उन्होंने मिशन कार्य के साथ-साथ सामाजिक परियोजनाएँ चलाईं। उन्होंने स्थानीय नेताओं से संवाद किया, क्षेत्रीय इतिहास का अध्ययन किया और यहाँ तक कि साक्षरता को सुलभ बनाने के लिए सरल वर्तनी पद्धति भी अपनाई।

पद्धतियाँ और विवाद

भाषा सीखना, साहित्य संपादन, समाचारपत्र निकालना — इन सबने मोग्लिंग को एक जटिल स्थिति में ला खड़ा किया। एक ओर, कन्नड़ विद्वान और बाद के साहित्यकार उन्हें आधुनिक कन्नड़ साहित्य और पत्रकारिता का अग्रदूत मानते हैं। दूसरी ओर, उनके कार्य मिशनरी और औपनिवेशिक ढाँचे से जुड़े हुए थे। मुद्रण और अनुवाद कभी-कभी सांस्कृतिक बदलाव के साधन बने और मिशन बस्तियाँ सामाजिक संरचनाओं को प्रभावित करती थीं। इसलिए आधुनिक मूल्यांकन उन्हें योगदानकारी तो मानता है, किंतु उनके उद्देश्यों की आलोचनात्मक व्याख्या भी करता है।

उत्तरकालीन प्रभाव

मोग्लिंग का प्रभाव उनके जीवनकाल से परे तक फैला। उन्होंने फर्डिनेंड किट्टल जैसे विद्वानों को प्रोत्साहित किया, जिनका कन्नड़–अंग्रेज़ी शब्दकोश बाद में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। उनके प्रकाशित ग्रंथों से विद्वानों और विद्यार्थियों को कन्नड़ भाषा और संस्कृति के अध्ययन का आधार मिला।

मैंगलोर और कर्नाटक में उनके द्वारा स्थापित या प्रेरित संस्थाएँ आज भी शिक्षा में योगदान देती हैं। मोग्लिंग इंस्टीट्यूट ऑफ जर्मन लैंग्वेज (मैंगलोर) उनके इसी विरासत की याद दिलाता है।

विरासत और स्मरण

1881 में मोग्लिंग का निधन जर्मनी के एसलिंगन में हुआ। वे कन्नड़ ग्रंथ-संपादन, कविताएँ और पहला कन्नड़ समाचारपत्र पीछे छोड़ गए। उनकी 200वीं जयंती (2011) पर कर्नाटक में अनेक कार्यक्रम हुए और मैंगलोर के धर्मशास्त्रीय महाविद्यालय में उनकी प्रतिमा का अनावरण किया गया। आधुनिक कन्नड़ लेखक और इतिहासकार उन्हें कन्नड़ मुद्रण-संस्कृति के जनक के रूप में स्वीकार करते हैं, यद्यपि मिशनरी उद्देश्यों पर आज भी विमर्श जारी है।

निष्कर्

हरमन मोग्लिंग का जीवन इस बात का उदाहरण है कि संस्कृतियाँ किस प्रकार अप्रत्याशित रूप से मिलती हैं। एक जर्मन मिशनरी

मैंगलोर आता है और कन्नड़ साहित्य का आधारस्तंभ बन जाता है। चाहे इसे सांस्कृतिक संरक्षण कहा जाए, सांस्कृतिक appropriation या दोनों का मिश्रण, तथ्य यह है कि उन्होंने शास्त्रीय कन्नड़ ग्रंथों को मुद्रित रूप दिया, पहला समाचारपत्र शुरू किया, शैक्षणिक संस्थाएँ स्थापित कीं और कन्नड़ भाषा–साहित्य के मानचित्रण में योगदान दिया।

संदर्भ और संसाधन

1. मैंगलूरु समाचार (1843) – हरमन मोग्लिंग द्वारा प्रारंभ किया गया पहला कन्नड़ समाचारपत्र।
2. बिब्लियोथेका कार्नाटका (1848–1853) – छह खंडों में प्रकाशित कन्नड़ शास्त्रीय ग्रंथ।
3. बेसल मिशन आर्काइव्स: https://www.bmarchives.org – मोग्लिंग के पत्र, रिपोर्ट और कार्य।
4. डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया / इंटरनेट आर्काइव – बिब्लियोथेका कर्नाटका के डिजिटाइज़्ड संस्करण।
5. राइस, बी.एल. मैसूर गजेटियर (1897) ।
6. हार्डर, हंस. लिटरेचर एंड नेशनलिस्ट आइडियोलॉजी: राइटिंग हिस्ट्रीज़ ऑफ मॉडर्न इंडियन लैंग्वेजेज।

मण्डली से लेख

श्रीमती हेलेन करकड़ा
यू.बी.एम.क्रिस्ता कृपा चर्च, चेंबूर

हममें से बहुतों को यात्रा करना अच्छा लगता है। यात्राएँ हमें जीवन की व्यस्तता से अलग कर, परमेश्वर की सृष्टि की सुन्दरता का अनुभव कराती हैं। नगरीय जीवन हमें प्रायः ऊँची इमारतों, निरन्तर यातायात और भीड़-भाड़ वाली गलियों से घेर लेता है। किन्तु जब हम गाँव-देहात की ओर निकलते हैं, तब हमें कुछ और ही दृश्य देखने को मिलते हैं—भव्य पर्वत, हरियाली, घाटियाँ, बहती नदियाँ और हवा में लहराती अन्न की बालियाँ। ये सब हमारे सृजनहार की कारीगरी की ओर संकेत करती हैं।

फसल शास्त्रों में सबसे सुन्दर और सामर्थी चित्रों में से एक है। यह न केवल खेतों की वास्तविक प्रचुरता की ओर, बल्कि उन आत्मिक आशीषों की ओर भी संकेत करती है ; जिन्हें हमारा पिता परमेश्वर अपने बच्चों के जीवन में उण्डेलता है।

फसल, हल चलाने, बोने, सींचने और प्रायः बड़ी प्रतीक्षा तथा आशा के बाद मिलने वाली हर्षपूर्ण परिणति है। अनेक कारक जैसे धूप, वर्षा, जलवायु, कीट आदि—मनुष्य के वश से बाहर होते हैं, जो अन्ततः उपज को प्रभावित करते हैं। मानव प्रयासों की यह नाजुकता हमें नम्रता सिखाती है। मनुष्य परिश्रम करता है, परन्तु फसल यहोवा की होती है। वही और सिर्फ वही फसल का स्वामी है। यही सत्य हमारे व्यक्तिगत जीवन पर भी लागू होता है—स्वास्थ्य, परिवार, मित्रता, काम और अवसर—सब कुछ उसी के हाथ से आता है।

फसल हमें कृतज्ञता का पाठ भी पढ़ाती है। निर्गमन की पुस्तक में हम पढ़ते हैं कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने अपने लोगों, इस्राएलियों को मिस्र की दासता से अपनी सामर्थी शक्ति के अद्भुत प्रदर्शन द्वारा छुड़ाया। चालीस वर्षों की उजाड़ जंगल यात्रा के बाद वे ऐसे देश में प्रविष्ट हुए जो सचमुच और रूपक दोनों ही रूप में दूध और मधु से बह रहा था। परमेश्वर ने उन्हें पहले से ही आज्ञा दी थी कि प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश करने के बाद, वे वर्ष में तीन बार मिलापवाले तम्बू के पास पर्व मनाने आएँ। ये पर्व फसल से जुड़े हुए थे:

- फसह / पहिली उपज का पर्व – जौ की फसल।
-
- सप्तपर्व (पिन्तेकुस्त) – गेहूँ की फसल।
-
- झोपड़ियों का पर्व – फलों का बटोरा जाना।

इन पर्वों के द्वारा सर्वशक्तिमान परमेश्वर यह बात रेखांकित कर रहा था कि उनकी फसल और समृद्धि का स्रोत केवल वही है। और उनका उचित और अपेक्षित प्रत्युत्तर था—धन्यवाद।

फसल हमारे पिता परमेश्वर की विश्वासयोग्यता का प्रमाण भी है। प्रलय के बाद परमेश्वर ने नूह से वचन दिया: "जब तक पृथ्वी बनी रहेगी, बोवाई और कटनी, जाड़ा और गरमी, ग्रीष्म और शीत, दिन और रात कभी बन्द न होंगे।" (उत्पत्ति 8:22)। हर नई फसल इस

प्राचीन प्रतिज्ञा को पूरा करती है। मौसम की अनिश्चितताओं, वैश्विक चुनौतियों या व्यक्तिगत संघर्षों के बावजूद, पृथ्वी फल देती रहती है। यह स्थिरता हमें याद दिलाती है कि परमेश्वर का वचन अटल है। वही कल, आज और युगानुयुग एक- सा है।

फसल उदारता का आह्वान भी है। पुराने नियम में इस्राएल को आज्ञा दी गई थी कि वे अपनी फसल के खेतों के किनारे गरीबों और परदेशियों के लिये छोड़ दें (लैव्यव्यवस्था 19:9–10)। फसल का आशीर्वाद कभी संचित करने के लिये नहीं था, बल्कि बाँटने के लिये था। हमें चाहे भौतिक प्रचुरता मिले या आत्मिक वरदान, हमें इसलिए आशीष दी गई है कि हम औरों के लिये आशीष बनें।

बाइबल अक्सर "फसल" का प्रयोग आत्मिक जागृति के रूपक के रूप में करती है। प्रभु यीशु ने अपने चेलों से कहा: "फसल तो बहुत है परन्तु मजदूर थोड़े हैं।" (मत्ती 9:37)। प्रत्येक बीतता हुआ दिन हमें हमारे प्रभु के आगमन के और निकट ले आता है। समाचार माध्यम नैतिक पतन, अपराध की बढ़ती दर, आतंकवाद, जाति-विनाश, धार्मिक उन्माद, राष्ट्रवाद के रूप में छिपी परायी-द्वेष, और लिंग पहचान के संकटों की चर्चा करते हुए अन्धकारमय भविष्य की ओर संकेत करते हैं। तथापि जैसे-जैसे "काँटे" बढ़ते हैं, वैसे-वैसे "गेहूँ की फसल" भी बढ़ती है। सुसमाचार पृथ्वी के छोर-छोर तक पहुँच चुका है। वे ही माध्यम जिनका उपयोग अन्धकार की शक्तियाँ घृणा फैलाने के लिये करती हैं, वही चैनल शान्ति के सुसमाचार का प्रचार करने के लिये भी प्रयोग किए जा रहे हैं। प्राणघातक कोविड महामारी इसका एक उदाहरण है। मृत्यु, अराजकता और अनिश्चितता के बीच, इसने लोगों को पवित्रशास्त्र में गहराई से उतरने और परमेश्वर के शाश्वत प्रेम को खोजने का अवसर दिया। उस भविष्यवाणी के पूरे होने का समय समीप है—"क्योंकि जैसे जल समुद्र को ढक लेता है, वैसे ही पृथ्वी यहोवा की महिमा के ज्ञान से परिपूर्ण हो जाएगी।" (हबक्कूक 2:14)।

यीशु के अनुयायियों के रूप में हमें परमेश्वर के वचन का बीज बोने के लिये बुलाया गया है—अपने जीवनों में, अपने परिवारों में, और अपने समाज में। परिणाम उसी के हाथ में हैं, परन्तु हम भरोसा कर सकते हैं कि फसल का प्रभु एक अद्भुत और प्रचुर परिणाम देगा। जो कोई उसमें परिश्रम करता है उसके लिये आनन्दमय फसल प्रतीक्षा कर रही है: "...बोने वाला और काटने वाला दोनों साथ-साथ आनन्दित होंगे।" (यूहन्ना 4:36)

महिला रिट्रीट रिपोर्ट

यह बड़े हर्ष का विषय है कि मैं 13 सितम्बर 2025 को कुरला स्थित यू.बी.एम. क्रिस्टा कांथि चर्च में आयोजित महिला रिट्रीट के अद्भुत अनुभव को साझा कर रही हूँ। यह कार्यक्रम सुबह 9:00 बजे से शाम 4:30 बजे तक चला।पहली बार यह रिट्रीट बेंगलुरु की ओवरकमर्स विमेन्स फेलोशिप और मुंबई के यू.बी.एम. चर्च काउंसिल की विमेन्स फेलोशिप की सदस्याओं के संयुक्त सहयोग से आयोजित किया गया।कार्यक्रम की शुरुआत रेव. गॉडफ्री सोआन्स की प्रारंभिक प्रार्थना से हुई। इसके बाद यू.बी.एम. चर्च काउंसिल, मुंबई की सचिव श्रीमती मेबल सोआन्स ने महिला फेलोशिप की सदस्याओं द्वारा तैयार किए गए हस्तकला स्टॉल्स का उद्घाटन किया।इस रिट्रीट में कुल 210 प्रतिभागियों ने भाग लिया। रिट्रीट का मुख्य विषय था — "उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे" (मत्ती 7:16)। श्रीमती देबोरा टाटिगिरी ने सभी 14 केंद्रों के प्रमुख नेताओं के साथ मिलकर स्तुति और आराधना का नेतृत्व किया।प्रातःकालीन सत्र श्रीमती लेवेना न्यू बिगिन, निदेशक – ओवरकमर्स विमेन्स फेलोशिप, द्वारा संचालित किया गया, जिसमें अंग्रेज़ी से हिन्दी अनुवाद श्रीमती अरुणा ने किया। दोपहर का सत्र डा. अमृता जैन दुबे द्वारा लिया गया, जिनका परिचय श्रीमती आल्मा जेवियर, उपाध्यक्ष – यू.बी.एम. चर्च काउंसिल, मुंबई, ने कराया। डा. दुबे ने महिलाओं के स्वास्थ्य से संबंधित महत्वपूर्ण विषयों पर प्रकाश डाला, जिसे प्रतिभागियों ने अत्यंत सराहा।रिट्रीट का समापन रेव. सैमुअल टाटिगिरी, संयोजक – महिला विभाग, द्वारा आभार प्रस्ताव से हुआ, जिसके बाद रेव. इयान ऐमन ने समापन प्रार्थना की। सभी प्रतिभागी मूल्यवान शिक्षाओं, गहन सहभागिता और मधुर स्मृतियों से समृद्ध होकर लौटे।रिट्रीट के सफल और सुचारु आयोजन में उत्कृष्ट भूमिका निभाने के लिए सभी पादरियों को विशेष धन्यवाद और सराहना।

मरोल मेडिकल कैंप रिपोर्ट

यू.बी.एम. क्रिस्टा शांति चर्च, मरोल द्वारा एस.बी.टी.सी. मडाऊबाग के सहयोग से 17 अगस्त 2025 को अर्धदिवसीय निःशुल्क चिकित्सा एवं रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।इस शिविर का उद्देश्य स्थानीय समुदाय को सुलभ स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करना, सामान्य स्वास्थ्य समस्याओं के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा निवारक स्वास्थ्य देखभाल की आदतों को प्रोत्साहित करना था।चिकित्सा शिविर का मुख्य उद्देश्य था —निःशुल्क स्वास्थ्य जांच और चिकित्सकीय परामर्श प्रदान करना।स्वच्छता, पोषण और रोग-निवारण के प्रति जागरूकता फैलाना।ऐसे मरीजों की पहचान करना जिन्हें आगे उपचार की आवश्यकता है, और उन्हें उपयुक्त स्वास्थ्य केंद्रों की ओर मार्गदर्शन देना।

महिला रिट्रीट

Come, Let us Bow down in Worship, let us kneel before the Lord Our Maker.
Psalms 95:6

आउटरीच कार्यक्रम

मेड कैंप

चेंबूर

नवी मुंबई

नवी मुंबई

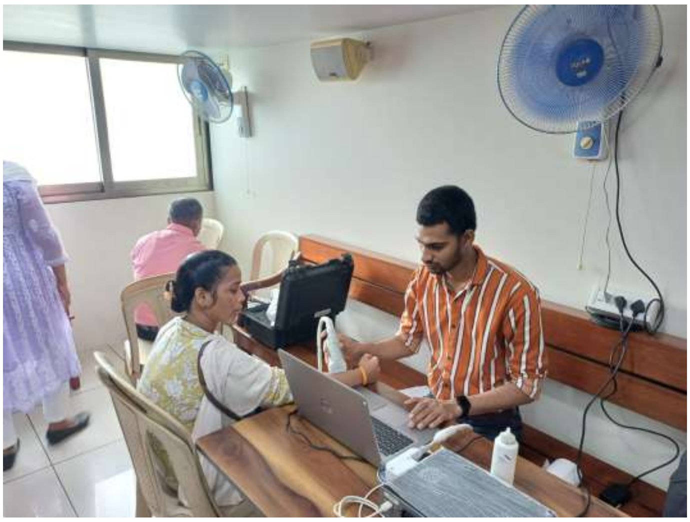

हिंदी सम्मेलन

हस्तशिल्प

Samsung Galaxy A16 5G (Aaron)
Sept 13, 2025 9:07 AM

Samsung Galaxy A16 5G (Aaron)

FLOWERS
ALPHABET
BOMBAY
SCHOOL

BALWADI
ALPHABET

MONSOON
WELCOME
SCHOOL

इंटर चर्च यूथ फेलोशिप

डोंबिवली और अंबरनाथ

कुर्ला और विक्रोली

भांडुप और ठाणे

PAGE ADVERTISEMENT

U.B.M. CHURCH

FULL PAGE (COLOR) - RS. 5,000/-

HALF PAGE (COLOR) - RS. 3,000/-

FULL PAGE (B&W) - RS. 3,000/-

HALF PAGE (B&W) - RS. 1,500/-

NEW

WEDDING ANNIVERSARY,
OBITUARY,
BIRTHDAY AND
BUSINESS ADS - RS 500/- EACH

For more information please contact:

8767-756-165 | 8108-094-057 | 8105-349-008

e-mail: ubmcmagazine@gmail.com

We intend to use 50% of the funds raised towards outreach initiatives (Covid affected members, HIV Patients, Trans genders, Missionaries, etc.) and balance 50% towards digital initiatives.

धन्यवाद

Email : ubmcmagazine@gmail.com
Website : www.ubmchurches.com
Contact no : 8105-349-008 / 8108- 094-057